अथानुक्रमणिका.

॥ श्री गौतम गुरुभ्योनमः ॥

॥ अथ श्राध प्रतिक्रमण सूत्रादि प्रारंभः ॥

॥ अथ नवकार पंच मंगल रूप ॥

॥ नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरिआणं, नमो उवज्झायाणं, नमोलोए सव्व साहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो,॥ मंगलाणंच सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं, ॥इति ॥ १ ॥ पदनव, संपदानव, गुरुअक्षर सात, लघुअक्षर एकशठ, सर्वाअक्षर अडसठ.

॥ अथ पंचिंदिअ ॥

॥ पंचिंदिअ संवरणो, तह नवविह बंभचेर गुत्ति धरो ॥ चउविह कसाय मुक्को ॥ इअ अठारस गुणेहि संजुत्तो ॥ १ ॥ पंचमह व्वय जुत्तो ॥ पंच विहायार पालण समत्थो ॥ पंच समिउ ति गुत्तो ॥ छत्तीस गुणेहि गुरु मज्झ ॥ २ ॥ इति ॥ २ ॥ पद आठ, गाथा बे, गुरुअक्षरदश, लघुअक्षर सीतेर, सर्वाक्षर ऐंसी.

॥ अथ खमासमण ॥

॥इच्छामि खमासमणो ॥ वंदिउं जावणिज्जाए ॥ निसिहिआए ॥ मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥ गुरुअक्षर त्रण, लघुअक्षर पचीश, सर्वाक्षर अठावीश.

॥ अथ सुगुरुने सातासुख पृछा ॥

॥इछाकार, सुहराइ, सुहदेवसि, सुख तप, शरीर निरा बाध, सुख संयमयात्रा, निर्वहोगेजी, स्वामी सा ताछेजी, जात पाणिनो लाज देज्योजी ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ इरियावहिया ॥

॥ इछाकारेण संदिसह जगवन् इरियावहियं, पडिक्क मामि, इछं इछामि पडिक्कमिउं ॥ १ ॥ इरिया वहिया ए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, उसाउत्तिंग पणग दग, मट्टी मक्कडा संता णा, संकमणे,जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदि या, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अनिहया, वत्ति आ, लेसिआ, संघाइआ, संघट्टिया, परियाविया, किला मिया, उद्दविया, गणाउगणं, संकामिया, जीवियाउ, ववरोविया, तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ तस्सउत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरी करणेणं, पायछित्त करेणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं, निग्घाय ण हाए. गमि काउस्सग्गं इति॥ ६ ॥ ए पांचमा, छहा बेसूत्रनामली, पद बत्रीश, संपदा आग, गुरुअक्कर चोवी श,लघुअक्कर एकसोने पंचोतेर,सर्वाक्कर एकसोने नवाणु.

॥ अथ अन्नत्थ ऊससिएणं ॥

॥ अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीए एणं, जंजाइएणं, उड्डुएणं, वाय निसग्गेणं, जमलिए पि त्तमुछाए, सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचा लेहिं, सुहुमेहिं दिठि संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अजग्गो अविराहिउ, हुज्जिमे काउस्सग्गो, जाव अरिहं ताणं, जगवंताणं, नमुक्कारेणं, नपारेमि, तावकायं, ग णेणं, मोणेणं, जाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि. इति ॥७॥ संपदापांच, पद अठावीश, गुरुअक्षरतेर, लघुअक्षर ए कसोने सत्तावीश, सर्वाक्षर एकसोने चालीश.

॥ अथ लोगस्स ॥

॥लोगस्स उज्जोअगरे ॥ धम्म तित्थयरे जिणे ॥ अ रिहंते कित्तइस्सं ॥ चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसज मजिअंच वंदे ॥ संजव मजिणंदणंच सुमइंच ॥ पउम प्पहं सुपासं ॥ जिणंच चंदप्पहंवंदे ॥ २ ॥ सुविहिंच पुप्फदंतं ॥ सीअल सिज्जंस वासुपुज्जंच ॥ विमल मणं तं च जिणं ॥ धम्मं संतिंच वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरंच मल्लिं ॥ वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणंच ॥ वंदामि रिठ्ठनेमिं ॥ पासं तह वद्धमाणंच ॥ ४ ॥ एवं मए अ जिथुआ ॥ विहुय रय मला पहीण जर मरणा ॥ च

उवीसंपि जिणवरा ॥ तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कि त्तिय वंदिय महिया ॥ जेए लोगस्स उत्तमासिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलानं ॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदे सु निम्मलयरा ॥ आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥ सागर वर गंनीरा ॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥ सव्वलोए. इति ॥८॥ पदअठावीश, संपदा अठावीश, गुरुअक्षर अ ठावीश, लघुअक्षर बसेने बत्रीश, सर्वाक्षर बसेने साठ.

॥ अथ सामायकनुंपच्चखाण ॥

॥करेमि नंते सामाइयं, सावज्जं जोगं, पच्चरकामि, जाव नियमं, पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं, मणेणं, वायाए, काएणं, नकरेमि, नकारवेमि, तस्सनंते, पडिक्क मामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि. इति॥९॥

॥ अथ सामायक पारवानुं ॥

॥सामाइअ वयजुत्तो ॥ जाव मणे होइ नियम संजु त्तो ॥ छिन्नइ असुहं कम्मं ॥ सामाइअ जत्तिआवारा ॥ ॥ १ ॥ सामाइअं मिउकए ॥ समणोइव सावउ हवइ ज म्हा ॥ एएण कारणेणं ॥ बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥२॥ सामायिक विधिं लीधूं, विधिं पारिउं ॥ विधिकरत्तां जे कोइ अविधि हुउंहोए ॥ तेसविहुं मन वचन कायाये करी ॥ मिच्छामिदुक्कडं ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥

॥इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ॥ चैत्यवंदन करूं, इच्छं॥ जग चिंतामणि जगनाह, जग गुरु जगरक्खण ॥ जग बंधव जग सच्चवाह, जगभाव विअक्खण ॥ अठा वय संठविअरूव, कम्मठ्ठ विणासण ॥ चउवीसंपि जिणवर जयंतु, अप्पडिहय सासण ॥ १ ॥ कम्मभू मिहिं कम्मभूमिहिं, पढम संघयणि ॥ उक्कोसय स त्तरिसय, जिणवराण विहरंतलब्भइ ॥ नवकोडिहिं केवलिण, कोडिसहस्स नव साहु गम्मई ॥ संपइ जि णवर वीसमुणि, बिहुंकोडिहिं वरनाण ॥ समणह को डि सहसदुअ, थुणिजिअ निच्च विहाणि ॥ २ ॥ ज यउ सामीअ जयउ सामीअ, रिसह सत्तुंजि ॥ उज्जिंत पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरि मंडण ॥ भरुअ च्छहिं मुणिसुव्वय, मुहरिपास दुह दुरिअ खंडण ॥ अवर विदेहिं तित्थयरा, चिहुं दिसि विदिसि जिंकेवि ॥ तीआणागय संपइअ, वंदु जिण सव्वेवि ॥ ३ ॥ सत्ता णवइ सहस्सा ॥ लक्खा छप्पन्न अठ्ठकोडीउ ॥ बत्तीस य बासिआइं ॥ तिअलोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पनरस कोडि सयाइं ॥ कोडी बायाल लक्ख अडवन्ना ॥ छत्तीस सहस्स असिइ॥सासय बिंबाइं पणमामि ॥५॥इति॥ १ ॥

॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ जंकिंचि नाम तिब्बं॥सग्गे पायाल माणुसेल्लोए ॥ जाइं जिण बिंबाइं ॥ ताइं सवाइं वंदामि ॥इति॥१२॥

॥ अथ नमुत्थुणं वा सक्रस्तव ॥

॥ नमुत्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं, आईगराणं, तिब्बयराणं, सयं संबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिस सीहाणं, पुरिसवर पुंडरीआणं, पुरिसवर गंध हत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोग पईवाणं, लोग पज्जोअ गराणं, अभय दयाणं, चरकुदयाणं, मग्गदयाणं, सरण दयाणं, बोहि दयाणं, धम्म दयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्म नायग्गाणं, धम्म सारहीणं, धम्म वर चाउरंत चक्कवट्टीणं, अप्पडिहय वर नाणं, दंसण धराणं, विअट्ट छउमाणं, जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं, सव्व न्नूणं, सव्व दरसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मरकय मव्वाबाह, मपुणरावित्ति सिद्धिगई, नाम धेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिय भयाणं, जेअ अईआ सिद्धा, जेअ भविस्संत णागए काले॥ संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१॥ इति॥१३॥ संपदानव, गाथाएक,

पदतेत्रीश, गुरुअक्षर तेत्रीश, लघुअक्षर बसेने चोशठ, सर्वाक्षर बसेने सत्ताणु.

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥जावंति चेइआइं,उड्ढेअ अहेअ तिरिअ लोएअ॥सव्वाइं ताइं वंदे ॥ इहसंतो तत्र संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावंत केविसाहू ॥

॥जावंत केवि साहू॥भरहे रवए महाविदेहेअ॥सव्वेसि तेसि पणउ ॥ तिविहेण तिदंम्ड विरयाणं॥१॥इति॥१५॥

॥ अथ नमस्कार ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः ॥ इति१६

॥ अथ उपसर्ग हर स्तवन ॥

॥ उवसग्ग हरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्म घण मुक्कं ॥ विसहर विस निन्नासं ॥ मंगल कल्लाण आवासं ॥१॥ विसहर फुलिंग मंतं ॥ कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥ त स्स गह रोगमारी ॥ डुठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चि छउ दूरे मंतो ॥ तुझपणामो वि बहु फलोहोइ ॥ नर तिरि एसुवि जीवा ॥ पावंति न डुरक दोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे ॥ चिंतामणि कप्पपायव ब्नहिए ॥ पावंति अविग्घेणं ॥ जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुउ म हायस ॥ भत्तिब्नर निब्नरेण हिअएण ॥ ता देव दिज्ज बो

हिं ॥ नवे नवे पास जिणचंद ॥५॥ इति ॥ १७ ॥ पदवी
श, संपदावीश, गुरुअक्षरवीश, लघुअक्षर एकशोने पांस
ठ, सर्वाक्षर एकसोने पंच्याशीछे.

॥ अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ मम तुहप्पभावउ
भयवं ॥ भवनिव्वेउ मग्गाणु, सारिआ इठ फल सिद्धी ॥ १ ॥
लोग विरुद्ध च्चाउ ॥ गुरुजण पूआ परछ करणंच ॥ स
हगुरु जोगोतव्वयण, सेवणा आभव मखंमा ॥ २ ॥ वा
रिज्जइ जइवि निआण, बंधणं वीअराय तुह समए ॥
तहवि मम हुज्ज सेवा ॥ भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥
डुरकखउ कम्मखउ ॥ समाहि मरणंच बोहिलाभोअ ॥
संपज्जउ मह एअं ॥ तुह नाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥
सर्व मंगल मांगल्यं ॥ सर्व कल्याण कारणं ॥ प्रधानं सर्व
धर्माणां ॥ जैनं जयति शासनं ॥ ५ ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ अथ अरिहंत चेइआणं ॥

॥ अरिहंत चेइआणं, करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥ वंद
ण वत्तिआए, पूअण वत्तिआए, सक्कार वत्तिआए,
सम्माण वत्तिआए, बोहिलाभ वत्तिआए, निरुवसग्ग
वत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहा
ए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥ ३ ॥ इति ॥ १९ ॥

अन्नच० ॥ पदपंदर, संपदात्रण, गुरुअक्षरसोल, लघुअ क्षरतहोतेर, सर्वाक्षर नेव्यासीछे.

॥ अथ कल्याणकंदं स्तुति ॥

॥कल्याण कंदं पढमं जिणेंदं ॥ संतिं तउ नेमिजिणं मुणिंदं ॥ पासं पयासं सुगुणिक्क गणं ॥ नत्तीय वंदे सिरि वद्धमाणं ॥ १ ॥ अप्पार संसार समुद्दपारं ॥ पत्ता सिवं दिंतु सुइक्क सारं ॥ सव्वे जिणिंदा सुरविंद वंदा ॥ कल्लाण वल्लीण विसाल कंदा ॥ २ ॥ निव्वाण मग्गे वर जाण कप्पं ॥ पणासिया सेस कुवाय दप्पं ॥ मयं जिणाणं सरणं बुहाणं ॥ नमामि निच्चं तिजग प्पहाणं ॥ ३ ॥ कुंदिंदु गोरकीर तुसार वन्ना॥ सरोज हच्छा कमले निसन्ना॥ वाएसिरि प्पुच्छय वग्गहच्छा ॥ सुहाय सा अम्ह सया पसच्छा ॥ ४ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ संसारदावानीस्तुति ॥

॥संसार दावानल दाह नीरं॥संमोह धूली हरणेसमीरं॥ माया रसा दारण सारसीरं ॥ नमामि वीरं गिरिसारधीरं ॥ १ ॥ नावावनाम सुर दानव मानवेन ॥ चूला विलोल कमलावलि मालितानि ॥ संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि ॥ कामं नमामि जिनराज पदानि तानि॥२॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूरा निरामं ॥ जीवाहिंसा

विरजलहरीसंगमागाह देहं ॥ चूलावेलं गुरुगममणीसं कुलं दूरपारं ॥ सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधुसेवे ॥ ३ ॥ आमूलालोलधूलीबहुलपरिमलालीढ लोलालिमाला ॥ ऊंकारारावसारामलदलकमलागारनूमीनिवासे ॥ बायासंभारसारेवरकमलकरेतार हाराभिरामे ॥ वाणीसंदोहदेहे नवविरहवरंदेहि मे देवि सारं ॥ ४ ॥ इति ॥ २१ ॥ पद सोल, संपदा सोल, अक्षरबसेने बावनछे.

॥ अथ पुरकरवरदी ॥

॥ पुरकरवर दीवढे ॥ धायइ संफेअ जंबूदीवेअ ॥ नरहे रवय विदेहे ॥ धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तम तिमिर पफल विद्धं,सणस्स सुरगण नरिंदि महिअस्स ॥ सीमा धरस्स वंदे ॥ पफ्फोडिअ मोह जालस्स ॥ २ ॥ जाई जरा मरण सोग पणासणस्स ॥ कल्लाण पुरकल विसाल सुहावहस्स ॥ को देव दाणव नरिंद गणच्चिअस्स ॥ धम्मस्स सार मुवलप्प करेपमायं ॥३॥ सिद्धेभो पयउ नमो जिणमए नंदीसया संजमे ॥ देवं नाग सुवन्नकिन्नरगण सप्भूअ भावच्चिए ॥ लोगो जञ्च पइठिउ जगमिणं तेलुक्क मच्चासुरं ॥ धम्मो वढउ सास उ विजयउ धम्मुत्तरं वढउ ॥ ४ ॥ सुअस्सभवगउ ॥ इति

॥ २२ ॥ पद सोल, संपदा सोल, गुरुअक्षर चोत्रीश, लघुअक्षर एकसोने ब्यासी, सर्वाक्षर बसेने सोल. करेमिकाउस्सग्गं, वंदण वत्तिआए० ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥ पारगयाणं परंपर गयाणं ॥ लो अग्ग ॥ मुवगयाणं नमो सया सव्व सिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो ॥ जंदेवा पंजली नमंसंति ॥ तं देव देव महिअं ॥ सिरसावंदे महावीरं ॥२॥ इक्कोवि नमुक्कारो ॥ जिणवर वसहस्स वद्धमाणस्स ॥ संसार सागराउ ॥ तारेइ नरंव नारिंवा ॥ ३ ॥ उज्जिंत सेल सिहरे ॥ दिक्खा नाणंच निसिहिआजस्स ॥ तंधम्म चक्कवट्टिं ॥ अरिठ्ठने मिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ्ठ दस दोय, वंदिया जिणवरा चउव्वीसं ॥ परमठ्ठ निठ्ठिअठ्ठा ॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ २३ ॥

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं ॥ संतिगराणं ॥ सम्मद्दिठ्ठि समाहि गराणं ॥ इति ॥ २४ ॥ ए त्रेवीशमां अने चोवीशमां बने सूत्रना मलीने पद वीश, संपदा वीश, गुरु अक्षर एकत्रीश, लघु अक्षर एकसोने सडसठ, सर्वाक्षर एकसोने अठाणु छे. ॥ करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थ० ॥

॥ अथ जगवानादि वंदन ॥

॥जगवानहं आचार्यहं उपाध्यायहं सर्वसाधुहं॥इति॥२५॥

॥ अथ देवसिअ प्रतिक्रमणे ठाउं ॥

इछा कारेण संदिसह जगवन् ॥ देवसिअ पडिक्कमणे ठाउं ॥ इछं सवस्सवि देवसिअ डुच्चिंतिअ डुप्नासिअ डुच्चिछिअ मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ इछामि ठामि ॥

॥ इछामि ठामि काउस्सग्गं, जोमे देवसिउ अईआरो कउ, काइउ, वाइउ, माणसिउ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, डुप्नाउ, डुव्विचिंतिउ, अणायारो, अणिछिअव्वो, असावग पाउग्गो, नाणं तह दंसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हं मणुव्वयाणं, तिण्हं गुणवयाणं, चउण्हं सिस्का वयाणं, बारस विहस्स सावग धम्मस्स ॥ जं खंम्डिअं, जंविराहिअं, तस्स मिछामिडुक्कडं ॥ इति ॥ २७ ॥ गुरुअक्षर अठावीश, लघु अक्षर एकसोने पांत्रीश, सर्वाक्षर एकशोने त्रेसठछे.

॥ अथ अतिचारनी गाथा आठ ॥

॥नाणंमि दंसणंमिअ ॥ चरणंमि तवंमि तहय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो ॥ इअ एसो पंचहा जणिउ

॥ १ ॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहयनिएहव
णे ॥ वंजण अब तडुनए ॥ अठविहो नाणमायारो
॥ २ ॥ निस्संकिअ निक्कंखिअ ॥ निव्वितिगिच्छा अमूढ
दिठीअ ॥ उववूह थिरीकरणे ॥ वच्छल्ल पभावणे अठ
॥ ३ ॥ पणिहाण जोगजुत्तो ॥ पंचहिं समीइहिं तीहिं
गुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो ॥ अठविहो होइ नायव्वो ॥४॥
बारस विहंमिवि तवे ॥ सप्भितर बाहिरे कुसल दिठे ॥
अगिलाइ अणाजीवी ॥ नायव्वो सो तवायारो ॥ ५ ॥
अणसण मूणो अरिया ॥ वित्ती संखेवणं रसच्चाउ ॥
काय किलेसो संलीण, याय बझो तवोहोइ ॥ ६ ॥ पा
यच्छित्तं विणउ ॥ वेयावच्चं तहेव सज्झाउ ॥ झाणं उस्स
ग्गोविअ ॥ अप्भितरउ तवो होइ ॥ ७ ॥ अणगूहिअ
बल विरउ ॥ परिक्कमइ जो जहुत्त माउत्तो ॥ जुंजइअ
जहा थामं ॥ नायव्वो वीरिआयारो ॥ ८ ॥ इति॥ २८॥

॥ अथ सुगुरु वांदणा ॥

॥ इच्छामि खमासमणो, वंदिउं॥जावणिज्झाए, निसीहि
आए, अणुजाणह मेमिउग्गहं निसिही ॥ अहो कायं
काय संफासं ॥ खमणिज्झो भे किलामो ॥ अप्पकिलं
ताणं बहुसु भेणभे ॥ दिवसो वइक्कंतो जत्ताभे ॥ जवणि
जंचभे खामेमि खमासमणो ॥ देवसिअं वइक्कमं आव

सिआए ॥ पडिक्कमामि खमासमणाणं ॥ देवसिआए आसायणाए ॥ तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिछाए ॥ मण डुक्कडाए वय डुक्कडाए ॥ काय डुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोजाए सवकालिआए ॥ सव मिछोवयाराए ॥ सव धम्माइक्कमणाए ॥ आसायणाए जोमे अइआरो कउ ॥ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि ॥ निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ ॥ इति ॥ २ए ॥

बीजीवारनेंवांदणे आवसिआए ए पदनकहेवुं राइ पक्कि चोमासी संवत्सरिएं आम पाठकेहवो ॥ राइवइ कंता, चउमासीवइकंता, परकोवइकंतो, संवछरोवइकंतो, एम कहेवुं. एमां पद अठावन, गुरुअक्कर पचीश, लघु अक्कर बसेने एक, सर्वे मलीबसेने ठवीश अक्करोठे.

॥ अथ देवसिअंआलोउं ॥

॥ इछाकारेण संदिसह जगवन् ॥ देवसिअं अलोउं इछं ॥ आलोएमि जोमे देवसिउ ॥ ॥ इति ॥ ३० ॥

॥ अथ सातलाख ॥

॥ सातलाख पृथविकाय॥सातलाख अप्पकाय ॥ सात लाख तेउकाय ॥ सातलाख वाउकाय ॥ दशलाख प्रत्यकवनस्पति काय ॥ चउदलाख साधारण वनस्पतिकाये ॥ बेलाख बेरेंडी ॥ बेलाख तेरेंडी॥ बेलाख चोरिंडी॥ चारला

ख देवता ॥ चारलाख नारकी ॥ चारलाख तिर्यंच पंचें
द्री ॥ चौदलाख मनुष्य, एवंकारे ॥ चौरासीलाख जीवा
योनीमाहिं, माहरेजीवे जेकोइजीव॥ हण्योहोय, हणा
व्योहोय, हणताप्रत्यें अनुमोद्योहोय, तेसव्वेहुं मन
वचन कायाए करि ॥ मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ३१ ॥

॥ अथ अढारपापस्थानक ॥

॥पेहेले प्राणातिपात॥बीजे मृषावाद॥त्रीजे अदत्तादान॥
चोथे मैथुन॥पांचमे परिग्रह॥ छठे क्रोध ॥ सातमे मान ॥
आठमे माया॥ नवमे लोज ॥ दशमे राग॥ इग्यारमेद्वेष ॥
बारमें कलह॥तेरमें अभ्याख्यान ॥ चौदमें पैसुन॥पन्नरमें
रति अरति ॥ सोलमें परपरिवाद ॥ सत्तरमें माया मृषा
वाद ॥ अढारमें मिथ्यात्व शल्य ॥ एअढार पापस्थान
मांहिं ॥ माहारेजीवे जेकोइ सेव्युंहोय ॥ सेवराव्युंहोय॥
सेवताप्रतें ॥ अनुमोद्युंहोय, तेसव्वेहुं, मन वचन काया
एकरी ॥ तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ३२ ॥

॥ अथ सव्वस्सवि ॥

॥ सव्वस्सवि, देवसिअ, डुच्चिंतिअ, डुप्भासिअ,
डुच्चिठ्ठिअ ॥ इछाकारेण संदिसह जगवन्इछं ॥ तस्स
मिछामि डुक्कडं. इति ॥ ३३ ॥

॥ इच्छामि पडिकमीउं ॥

॥ जोमे देवसिउअइआरोकउ० ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ अथ श्रावक पडिकमणा सूत्र ॥ अथवा वंदितासूत्र ॥

॥ वंदित्तु सव्व सिद्धे॥धम्मायरिएअ सव्वसाहूअ॥इच्छामि पडिक्कमिउं॥सावगधम्मा इआरस्स॥१॥जोमेवयाइयारो॥ नाणे तह दंसणे चरित्तेअ॥ सुहुमोअ बायरोवा ॥ तंनिंदे तंच गरिहामि॥२॥दुविहे परिग्गहंमि॥ सावज्जे बहुविहेअ आरंभे ॥ कारावणेअ करणे ॥ पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥३॥ जं बद्धं मिंदिएहिं ॥ चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ॥ रागेणव दोसेणव ॥ तंनिंदे तंच गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे ॥ ठाणे चंकमणे अणाभोगे ॥ अभिउगे अ निउगे ॥ पडिकम्मे० ॥५॥ संका कंख विगिच्छा ॥ पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥सम्मत्तस्स इआरे ॥पडिक्क०॥ ॥ ६ ॥ छक्काय समारंभे ॥ पयणेअ पयावणेअ जेदोसा॥ अत्तठाय परठा ॥ उभयठा चेव तंनिंदे ॥ ७ ॥ पंचण्ह मणुव्वयाणं ॥ गुणव्वयाणंच तिण्ह मइयारे ॥ सिक्खाणंच चउण्हं ॥ पडिक्कमे० ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयंमि ॥ थूलग पाणाइवाय विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे ॥ इच्छपमाय प्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह बंध छविच्छेए ॥ अइभारे भत्त पाण वुच्छेए ॥ पढम वयस्सइआरे ॥ पडिक्कमे० ॥१०॥

बीए अणुव्वयंमी ॥ परिथूलग अलिअ वयण विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे ॥ इत्थ पमाय प्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा रहस्सदारे ॥ मोसुवएसेअ कूडलेहेअ ॥ बीअ वयस्स इआरे ॥ पडिक्कमे० ॥१२॥ तइए अणुव्वयंमि ॥ थूलग परदव्व हरण विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे ॥ इत्थ पमाय प्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहड प्पउगे ॥ तप्पडिरूवे विरुद्ध गमणेअ ॥ कूड तुल कूडमाणे ॥ पडिक्कमे० ॥ १४ ॥ चउथे अणुव्वयंमि ॥ निच्चं परदार गमण विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे॥ इत्थ पमाय प्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर ॥ अणंग वीवाह तिव्व अणुरागे ॥ चउथ वयस्स इआरे ॥ पडिक्कमे०॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वएपं,चमंमि आयरिअ मप्पसत्थंमि ॥ परिमाण परिछेए ॥ इत्थ पमाय प्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्थू ॥ रूप्पसुवन्नेअ कुविअ परिमाणे ॥ दुपए चउप्पयंमि ॥ पडिक्कमे० ॥ १८ ॥ गमणस्सउ परिमाणे ॥ दिसासु उड्ढं अहेअ तिरिअंच ॥ वुड्ढिसइ अंतरद्धा ॥ पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥१९॥ मज्जंमिअ मंसंमिअ ॥ पुप्फेअ फलेअ गंधमल्लेअ ॥ उवभोगे परिभोगे॥ बीअंमि गुणव्वए निंदे ॥२०॥ सच्चित्ते पडिबद्धे ॥ अपोल दुप्पोलिअंच आहारे ॥ तुच्छोसहि भरकणया॥पडि०

॥ २१ ॥ इंगाली वण साडी ॥ नाडी फोडीसु वज्जए कम्मं ॥ वाणिज्जं चेव दंत ॥ लस्क रसं केस विस विसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लण ॥ कम्मं निल्लंछणंच दवदाणं ॥ सर दह तलाव सोसं ॥ असई पोसंच वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थ ग्गि मुसल जंतग ॥ तण कठे मंत मूल नेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविएवा॥पडि० ॥ २४ ॥ न्हाणूवट्टण वन्नग ॥ विलेवणे सद्द रूव रस गंधे ॥ वत्थासण आनरणे ॥ पडि० ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए ॥ मोहरि अहिगरण नोग अइरित्ते ॥ दंमंमि अणठाए ॥ तइअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे ॥ अणवठाणे तहासइ विहूणे ॥ सामाइअ वितह कए ॥ पढमेसिस्कावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे ॥ सद्दे रूवेअ पुग्गलस्केवे ॥ देसावगासिअंमि ॥ बीए सिस्कावए निंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चारविही ॥ पमाय तहचेव नोअणानोए ॥ पोसह विहि विवरीए ॥ तइए सिस्कावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निस्किवणे ॥ पिहिणे ववएस मच्छरे चेव ॥ कालाइकम्म दाणे ॥ चउथे सिस्कावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसुअ दुहिएसुअ ॥ जामे अस्संजएसु अणुकंपा ॥ रागेणव दोसेणव ॥ तं निंदे तंच गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविनागो ॥ नकउ तव चरण

करणजुत्तेसु ॥ संते फासु अदाणे ॥ तं निंदे तंच गरिहा
मि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए ॥ जीविअ मरणेअ आ
सस पउगे ॥ पंचविहो अइआरो ॥ मा मज्कं हुज्क मर
णंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स ॥ पडिक्कमे वाइअस्स
वायाए ॥ मणसा माणसिअस्स ॥ सवस्स वया इआर
स्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिरकागा, रवेसु सन्ना कसाय
दंम्मेसु॥ गुत्तीसुअ समिईसुअ ॥ जो अइआरोअ तं निंदे
॥ ३५ ॥ सम्मद्दिठीजीवो ॥ जइविहु पावं समायरे किं
चि ॥ अप्पोसि होइ बंधो ॥ जेण न निद्धंधसं कुणइ
॥ ३६ ॥ तं पिहु सपडिक्कमणं ॥ सप्परिआवं सउत्तर
गुणंच ॥ खिप्पं उवसामेई ॥ वाहिव सुसिरिकिउ विज्को
॥ ३७ ॥ जहा विसं कुठगयं ॥ मंत मूल विसारया ॥
विज्का हणंति मंतेहिं ॥ तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥
एवं अठविहं कम्मं ॥ राग दोससमज्जिअं ॥ आलोअं
तोअ निंदंतो ॥ खिप्पं हणइ सावउ ॥ ३९ ॥ कय
पावोवि मणुस्सो ॥ आलोइय निंदिअ गुरु सगासे ॥
होइ अइरेग लहुउ ॥ उ हरिअ भरुव भारवहो ॥४०॥
आवस्स एण एए,ण सावउ जइवि बहुरउ होइ ॥
डुरकाण मंत किरिअं ॥ काही अचिरेण कालेण ॥४१॥
आलोअणा बहुविहा ॥नयसंभरिआ पडिक्कमणकाले ॥

मूलगुण उत्तरगुणे ॥ तंनिंदे तंचगरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलि॥पन्नत्तस्स अब्नुठिउमि॥ आराहणाए ॥ विरउमि विराहणाए ॥ तिविहेण पडिक्कतो ॥ वंदामिजिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेईआई० ॥ ४४ ॥ जावंत केविसाहू० ॥ ४५ ॥ चिर संचिय पाव पणा,सणीइ नवसय सहस्स महणीए ॥ चउवीस जिण विणिगय, कहाइं वोलंतुमे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता ॥ सिद्धा साहू सुअंच धम्मोअ ॥ सम्म द्दिठीदेवा ॥ दिंतु समाहिंच बोहिंच ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे॥किच्चाण मकरणेअ पडिक्कमणं ॥ असदहणेअ तहा ॥ विवरीय परूवणाएअ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव्व जीवेसु ॥ सव्वे जीवा खमंतु मे॥मित्तीमे सव्वनूएसु॥ वेरं मझं नकेणई ॥ ४९ ॥ एव महं आलोइअ ॥ निंदिअ गरहिअ डुगंछिअं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कतो ॥ वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ अथ अब्नुठिउ ॥

॥ इच्छा कारेण संदिसह नगवन् ॥ अब्नुठिउ हं अप्नितर देवसिअं ॥ खामेउ इछं खामेमि देवसिअं ॥ जंकिंचि अपत्तिअं परपत्तिअं ॥ नत्ते पाणे विणए वेआवच्चे ॥ आलावे संलावे उच्चासणे ॥ समासणे अंतरनासाए ॥

उवरिनासाए जंकिंचि ॥ मज्ज विणय परीहीणं ॥ सुहु
मंवा बायरंवा, ॥ तुजे जाणह, अहं नयाणामि, ॥ त
स्स मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ३६ ॥

॥ अथ आयरिअ उवज्झाए ॥

॥ आयरिअ उवज्झाए ॥ सीसे साहम्मिए कुलगणेअ ॥
जेमे केइ कसाया ॥ सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ स
व्वस्स समण संघ,स्स नगवउ अंजलिं करिअ सीसे ॥
सव्वं खमावइत्ता ॥ खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥२॥ सव्व
स्स जीव रासि,स्स नावउ धम्म निहिअ निअचित्तो ॥
सव्वं खमावइत्ता ॥ खमामि सव्वस्स अहयंपि॥३॥इति३७

॥ अथ नमोस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ इछामो अणुसहिं॥नमो खमासमणाणं॥नमोर्हत्०॥
नमोस्तु वर्द्धमानाय,स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥ तज्जया वा
प्त मोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनां ॥ १ ॥ येषां विकचा
र विंदराज्या ॥ जायः क्रम कमलावलिं दधत्या ॥ सह
शै रिति संगतं प्रशस्यं ॥ कथितं संतु शिवाय तेजिनेंद्राः
॥ २ ॥ कषायतापार्दित जंतु निर्वृतिं ॥ करोतियो जैन
मुखांबुदोजतः ॥ सशुक्रमासोद्भववृष्टिसंनिनो ॥ द
धातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिरां ॥ ३ ॥ इति ॥ ३८ ॥

॥ अथ विशाललोचन ॥

॥ विशाललोचनदलं ॥ प्रोद्यद्दंतांशुकेसरं ॥ प्रात
र्वीरजिनेंद्रस्य ॥ मुखपद्मं पुनातुवः ॥ १ ॥ येषामभिषे
ककर्म कृत्वा ॥ मत्ता हर्षभरात् सुखं सुरेंद्राः ॥ तृणम
पि गणयंति नैव नाकं ॥ प्रातः संतु शिवाय ते जिनेंद्राः
॥ २ ॥ कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं ॥ कुतर्कराहुग्रस
नं सदोदयं ॥ अपूर्व चंद्रं जिनचंद्रनाषितं ॥ दिनागमे
नौमि बुधैर्नमस्कृतं ॥ ३ ॥ इति ॥ ३९ ॥

॥ अथ श्रुतदेव क्षेत्रदेवस्तुति ॥

॥ सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं० ॥ सुअ देवया भ
गवई ॥ नाणावरणीअ कम्म संघायं ॥ तेसिं खवेउ स
ययं ॥ जेसिं सुअ सायरे भत्ती ॥ १ ॥ इति ॥ ४० ॥

॥ अथ खित्तदेवयाए ॥ करेमि० ॥

॥ जीसेखित्ते साहू ॥ दंसण नाणेहिं चरण सहिएहिं ॥
साहंति मुरकमग्गं ॥ सादेवी हरउ डुरि आइं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ कमल दलस्तुति ॥

॥ कमलदलविपुलनयना ॥ कमलमुखी कमलगर्भसमगौ
री ॥ कमले स्थिता भगवती ॥ ददातु श्रुतदेवतासिद्धिं ॥ इति

॥ अथ अढाइज्जेसु मुनिवंदन ॥

॥ अढाइ ज्जेसु दीव समुद्देसु ॥ पन्नरससु कम्म भूमि

सु ॥ जावंत केविसाहू ॥ रयहरण गुच्छ पडिग्गह धारा ॥ पंचमहव्वयधारा ॥अट्ठारस सहस्स सीलंगधारा ॥ अरक या यारचरित्ता ॥ तेसव्वे सिरसा मणसा ॥ मत्थएण वंदामि ॥ २ ॥इति ॥ ४३ ॥

॥ अथ वरकनक ॥

॥ वरकनक शंख विद्रुम, मरकत घन संनिभं विगतमोहं ॥ सप्तति शतं जिनानां ॥ सर्वामर पूजितं वंदे ॥१॥

॥ अथ लघुशांतिस्तव ॥

॥ शांतिं शांति निशांतं ॥ शांतं शांता शिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शांति निमित्तं ॥ मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥१॥ उमिति निश्चित वचसे ॥ नमो नमो जगवते ऽर्हते पूजां ॥ शांतिजिनाय जयवते ॥ यशस्विने स्वामिने दमिनां ॥ २ ॥ सकलातिशेषक महा, संपत्ति समन्वितायशस्याय ॥ त्रैलोक्य पूजितायच ॥ नमो नमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामर सु समूह, स्वामिक सं पूजिताय निजिताय ॥ जुवनजनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वडुरितौघनाशन, कराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ डुष्टग्रहनूतपिशाच, शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाममंत्रप्रधानवाक्योपयोगकृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता न

मततं शांतिं ॥ ६ ॥ नवतु नमस्तु नगवति ॥ विजयेसु जये परापरैरजिते ॥ अपराजिते जगत्यां ॥ जयतीति जयावहे नवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापिच संघ,स्य नद्रकल्या णमंगलंप्रददे ॥ साधूनांच सदाशिव, तुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥ नव्यानां कृतसिद्धे ॥ निर्वृतिनिर्वाण जननि सत्वानां॥ अनयप्रदाननिरते ॥ नमोस्तु स्वस्ति प्रदे तुन्यं ॥ ए ॥ नक्तानां जंतूनां ॥ शुनावहे नित्यमुद्य ते देवि ॥ सम्यग्दृष्टीनां धृति, रति मतिबुद्धिप्रदाना य ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां ॥ शांतिनतानां च ज गति जनतानां ॥ श्रीसंपत्कीर्त्तियशो, वर्द्धनि जयदेवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलाऽनलविषविषधर, दुष्टग्र हराजरोगरणनयतः ॥ राक्षसरिपुगणमारी, चौ रेति श्वापदादिन्यः ॥१२ ॥ अथ रक्षरक्ष सुशिवं ॥ कुरु कुरु शांतिंच कुरुकुरु सदेति ॥ तुष्टिं कुरुकुरु पुष्टिं ॥ कुरु कुरु स्वस्तिंच कुरुकुरु त्वं ॥ १३ ॥ नगवति गुण वति शिवशांति ॥ तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरुकुरु जनानां उमिति नमोनमो ह्रौं ह्रीं ह्रूं ह्रः यः क्षः ह्रींफुट् फुट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं य न्नामाक्षर ॥ पुरःसरं संस्तुता जयादेवी ॥ कुरुते शांतिं नमतां ॥ नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरिदर्शित मंत्रपदविदर्न

तः स्तवः शांतेः ॥ सलिलादिजयविनाशी ॥ शांत्यादि करश्च नक्तिमतां ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठतिसदा ॥ शृणो ति नावयति वा यथायोग्यं ॥ सहिशांतिपदं यायात् ॥ सूरिःश्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः क्षयं यांति ॥ छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नता मेति ॥ पूज्य माने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगलमांगल्यं ॥ सर्व कल्याणकारणं॥प्रधानं सर्वधर्माणं ॥ जैनं जयति शास नं ॥ १९ ॥ इति ॥ ४५ ॥

॥ अथ चउक्कसाय ॥

॥ चउक्कसाय पडिमल्लु ल्लरणु ॥ डुज्जय मयण बा ण मुसुमूरणुं ॥ सरस पिअंगु वन्न गयगामिउ ॥ ज यउ पासु नुवणत्तयसामिउ ॥ १ ॥ जसुतणु कंति कडप्पसिणिद्धउ ॥ सोहइ फण मणि किरणालिद्धउ निन्नव जलहर तडिल्लय लंछिउ ॥ सोजिणु पासु पय ह्उ वंछिउ ॥ २ ॥ इति ॥ ४६ ॥

॥ अथ नरदेसरनी सज्झाय ॥

॥ नरदेसर बाहुबली ॥ अनयकुमारोअ ढंढणकुमा रो ॥ सिरिउ अणियाउत्तो ॥ अइमुत्तो नागदत्तोअ ॥ १ ॥ मेअज्ज थूलिनद्दो ॥ वयररिसि नंदिसेण सीहगिरी ॥ कयवन्नोअ सुकोसल ॥ पुंमरिउ केसि करकंमु ॥ २ ॥

हल्ल विहल्ल सुदंसण ॥ साल माहासाल सालिभद्दोअ, भद्दो दसन्नभद्दो ॥ पसन्नचंदोअ जसभद्दो ॥ ३ ॥ जंबु पहु वंकचूलो ॥ गयसुकुमालो अवंतिसुकुमालो ॥ धन्नो इलाइपुत्तो ॥ चिलाइपुत्तोअ बाहुमुणी ॥ ४ ॥ अज्जगिरि अज्जरक्खिअ ॥ अज्जसुहत्थी उदायगो मणगो॥ कालयसूरी संबो ॥ पज्जुन्नो मूलदेवोअ ॥ ५ ॥ पभवो विन्हु कुमारो ॥ अद्दकुमारो दढप्पहारीअ ॥ सिज्जंस कूरगडूअ ॥ सिज्जंभवमेहकुमारोअ ॥ ६ ॥ एमाइ महासत्ता ॥ दिंतु सुहं गुण गुणेहिं संजुत्ता ॥ जेसिं नामग्गहणे ॥ पावय बंधा विलय जंति ॥ ७ ॥ सुलसा चंदनबाला ॥ मणोरमा मयणरेह दमयंती ॥ नमया सुंदरि सीया ॥ नंदा भद्दा सुभद्दाय ॥ ८ ॥ रायमइ रिसीदत्ता ॥ पउमावइ अंजणा सिरीदेवी ॥ जिठ सुजिठ मिगावइ, पभावई चिल्लणा देवी ॥ ९ ॥ बंभी सुंदरि रूप्पिणि ॥ रेवइ कुंती सिवा जयंतीय ॥ देवइ दोवइ धारणि ॥ कलावई पुप्फचूलाय ॥ १० ॥ पउमावईय गोरी ॥ गंधारी लखमणा सुसीमाय ॥ जंबुवइ सच्चभामा ॥ रूप्पिणि कन्हठ महिसीउ ॥ ११ ॥ जरकाय जरकदिन्ना ॥ भूआ तहचेव भूअदिन्नाय ॥ सेणा वेणा रेणा ॥ भयणीउ थूलिभद्दस्स ॥ १२ ॥

इत्राइ महासइउ ॥ जयंति अकलंक सील कलिआउ ॥
अङ्गवि वङ्गइ जासिं, जस पडहो तिहुअणे सयले ॥
॥ १३ ॥ इति सत्ता सतीउनी सझाय ॥ ४७ ॥

॥ अथ ॥ मन्हजिणाण सझाय ॥

॥ मन्हजिणाणं आणं ॥ मिछं परिहरह धर समत्तं ॥
छविह आवसयंमि ॥ उजुत्तोहोइ पइ दिवसं ॥ १ ॥
पवेसु पोसहवयं ॥ दाणं सीलं तवो नावोअ ॥ सझा
य नमुक्कारो ॥ परोवयारोअ जयणाअ ॥ २ ॥ जिण
पूआ जिणथुणणं॥गुरुथुअ साहम्मिआणवछलं ॥ वव
हारस्सय सुद्धि ॥ रहजुत्ता तिछजुत्ताय ॥ ३ ॥ उव
सम विवेक संवर ॥ नासासमिई छजीव करुणाय ॥ ध
म्मिअजण संसग्गो ॥ करणदमो चरिण परिणामो
॥ ४ ॥ संघोवरि बहुमाणो ॥ पुछय लिहणं पनावणा
तिछे ॥ सढाण किच्च मेअं॥ निचं सुगुरुवएसेण ॥५॥इति॥

॥ अथ पोसहनुं पच्चख्काण ॥

॥ करेमि नंते पोसहं ॥ आहारपोसहं देसउ सव
उ सरीर सक्कार पोसहं सवउ ॥ बंनचेर पोसहं सवउ ॥
अवावार पोसहं सवउ ॥ चउविहे पोसेहींगमि ॥ जा
व दिवसं अहोरत्तंपजुवसामि ॥ डुविहं तिविहेणं ॥ मणे
णं वायाए काएणं न करेमि नकारवेमि। तस्सनंते पडिक्क

मामि ॥ निंदामि गरिहामि ॥ अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

॥ अथ पोसह पारता गाथा ॥

॥ सागरचंदोकामो, चंदवर्डिसो सुदंसणो धन्नो ॥ जेसिं पोसह पडिमा ॥ अखंडिआ जीविअंतेवि ॥ १ ॥ धन्ना सलाहणिज्जा ॥ सुलसा आणंद कामदेवाय ॥ जेसिं पसंसइ नयवं ॥ दढव्वयंतो महावीरो ॥ २ ॥ पोसह विधिं लीधउ ॥ विधिं पारिउ विधि करतां ॥ जिकोइ अविधि हुउ हुए ॥ तेसविहुं मन वचन कायाइं करी ॥ मिछामि डुक्कडं ॥ ॥ इति ॥ ५० ॥

॥ अथ तीर्थ वंदना ॥

॥ सकल तिर्थ वंदुं करजोडय ॥ जिनवरनामें मंगल कोडय ॥ पहेले स्वर्गे लाख बत्रीश ॥ जिनवर चईत नमुं निसदिस ॥ १ ॥ बीजे लाख अगविश कह्यां ॥ त्रीजे बारलाख सदह्यां ॥ चोथे स्वर्गे अडलख धार ॥ पांचमे वंदुं लाखज चार ॥ २ ॥ छठे स्वर्गे सहसपचास सातमे चालिस सहस प्रासाद ॥ आठमे स्वर्गे छ हजार ॥ नव दसमे वंदुं सतचार ॥ ३ ॥ अग्यार बारमे त्रणसें सार ॥ नवग्रैवेकें त्रणसें अढार ॥ पांचअनुत्तर सर्वेमली ॥ लाखचोरासि अधिकावली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणु त्रेवीश सार ॥ जिनवर भुवन तणो अधिकार ॥

लांबां सोयोजन विस्तार ॥ पंचास ऊंचां बहोतेर धार ॥
॥ ५ ॥ एकसो एंसि बिंब प्रमाण ॥ सन्नासहित एकचै
त्यें जाण ॥ सोकोड बावनकोड संजाल ॥ लाख चोरा
णु सहस चौआल ॥ ६ ॥ सातसें उपर साठविसाल॥
सविबिंब प्रणमुं त्रणकाल ॥ सातकोडनें बोहतरला
ख ॥ नूवनपतिमां देवलनाख ॥ ७ ॥ एकसोएंसि बिं
ब प्रमाण ॥ एक एक चैत्यें संख्याजाण ॥ तेरसेंकोड
नव्यासिकोड ॥ साठलाख वंडुं करजोड ॥ ८ ॥ बत्रीसें
ने उंगणसाठ, त्रीछालोकमां चैत्यनो पाठ ॥ त्रणलाख
एकाणुंहजार ॥ त्रणसें वीशतें बिंब जुहार ॥ ९ ॥ व्यं
तरज्योतिषिमां वलिजेह ॥ सास्वताजिन वंडुंतेह ॥ रुष
न चंद्रानन वारिषेण ॥ वर्द्धमान नामे गुण सेण ॥१०॥
समेतसिखर वंडुं जिन वीश॥ अष्टापदवंडुं चोवीश ॥ वि
मलाचलने घढगिरनार ॥ आबूउपर जिनवर जूहार ॥
॥ ११ ॥ संखेश्वर केशरीयो सार ॥ तारंगे श्रीअजित
जुहार ॥ अंतरीक वरकाणोपास ॥ जिरावलोने थंन
णपास ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पाटणजेह ॥ जिनवरचै
त्य नमुं गुणगेह ॥ वेहेरमान वंडुं जिनवीश ॥ सिद्धअनं
त नमुं निसदीस ॥ १३ ॥ अढीद्वीपमां जे अणगार ॥
अढारसहस सिलांगनाधार ॥ पंच महाव्रत सुमतिसार

पाळे पळावे पंचाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अभिंतर तप उजमाळ ॥ ते मुनि वंदुं गुण मणिमाळ ॥ नीतनीत उठी किरतिकरुं ॥ जीव कहे जवसायरतरुं ॥ १५ ॥ इति

॥ अथ श्रीमहावीरजिन छंद ॥

॥ सेवो वीरने चितमां नीत्यधारो ॥ अरिक्रोधने मन्न थी दूरवारो ॥ सुसंतोषवृत्ति धरो चित्तमांहिं ॥ राग द्वेष थी दूरथाउ उछांहिं ॥ १ ॥ पडयामोहना पासमांजेह प्राणी ॥ सुद्ध तत्वनी वात तेणे न जाणी ॥ मनु जन्म पामी वृथा कां गमोछो ॥ जैनमार्ग छंडी जुळाकां नमो छो ॥ २ ॥ अज्ञोनी अमानी निरागी तजोछो ॥ सज्ञो नी समानी सरागी नजोछो ॥ हरी हरादि अन्यथी शुं रमोछो ॥ नदी गंग मूकी गळीमांपडोछो ॥ ३ ॥ केईदेव हाथे असी चक्रधारा ॥ केईदेव घालेगळे रुंडमाळा ॥ केईदेव उछंगे राखेछ वामा ॥ केईदेवसाथे रमें वृंद रामा ॥ ॥ ४ ॥ केईदेव जप्पे लेई जप्पमाळा ॥ केई मांसजक्षी महा वीकराळा ॥ केई योगणी जोगणी जोगरागे ॥ केईरुडणी छागनो होममागे ॥ ५ ॥ ईस्या देवदेवीतणी आश राखे ॥ तदा मुक्तिनांसूखते केमचाखे ॥ जदा लोजना थोकनो पारनाव्यो ॥ तदा मद्धनो बिंदुउ मनजाव्यो ॥ ६ ॥ जेह देवळां आपणी आशराखे ॥ तेहपिंमने मन सूळे

अचारवे ॥ दिन्न हिन्ननी नीडते केम नाजे ॥ फुटो ढोलहो
ए कहोकेम वाजे ॥ ७॥ अरे मूढ भ्राता नजो मोक्षदा
ता ॥ अलोनीप्रनूने नजोविश्वख्याता ॥ चिंतामणी ला
रिखो एहसाचो ॥ कलंकी काचना पिंमसुंमत राचो ॥ ७ ॥
मंदबुद्धिसुं जेह प्राणी कहेछे ॥ सवीधर्म एकत्व नूलोन
मेछे ॥ किहां सर्षपाने किहां मेरुधीरं॥ किहां कायराने कि
हांशूरवीरं ॥ए॥ किहां स्वर्णथालं किहां कुंनखंमं ॥ कि
हां कोडवाने किहां खीर मंमं ॥ किहां खीरसिंधू किहां
खारनीरं ॥ किहां कामधेनू किहां गाग खीरं ॥ १० ॥
किहां सत्यवाचा किहां कूडवाणी ॥ किहां रंकनारी
किहां रायराणी ॥ किहां नारकीने किहां देव नोगी ॥ किहां
इंद्रदेही किहां कुष्टरोगी ॥ ११ ॥ किहां कर्मघाती किहां ध
र्मधारी ॥ नमो वीरस्वामी तजो अन्यवारी ॥ जिसी सेजमां
स्वप्नथी राज्यपामी ॥ राचेंमंदबुद्धि धरी जेह स्वामी ॥ १२॥
अथीरसुख संसारमां मन्नमाचें ॥ ते जना मुढमां श्रेष्ट
सुंइष्टगाजे ॥ तजो मोहमाया हरो दंनरोसी ॥ सजो पु
न्यपोसी नजो ते अरोसी ॥ १३ ॥ गतीचार संसार
अपारपामी ॥ आव्या आशधारी प्रनुपायस्वामी ॥ तुंही
तुंहि तुंही प्रनू पर्मरागी ॥ नवफेरनी श्रृंखला मोह ना
गी ॥ १४ ॥ मानीए वीरजी अर्जछे एक मोरी ॥ दीजे

दासकुं सेवना चर्णतोरी ॥ पुन्य उदय हुउं गुरु आज मेरो ॥ विवेके लह्योमें प्रभुदर्शी तेरो ॥ १५ ॥ इति ५२

॥ अथ गणधरस्तवलिख्यते ॥

॥ एकदश गणधरनां नाम ॥ प्रह्उठीनें करू प्रणाम ॥ इंद्रभुती पहेलोते जाण ॥ अग्निभुती बीजो गुणखाण ॥ ॥ १ ॥ वायुभुती त्रीजो जगसार ॥ गणधर चोथो व्यक्त उदार ॥ सासनपती सुधर्मासार ॥ मंफितनामे छगो धार ॥ २ ॥ मौर्यपूत्रते सातमो जेह ॥ अकंपीत अष्ठम गुणगेह ॥ मुनिवरमांहेजे प्रधान ॥ अचलभ्रात नवमोए नाम ॥ ३ ॥ नामथकि होय कोडी कल्याण ॥ दशमो मेतारज अविरलवाण ॥ एकादशमो प्रभास कहेवाय ॥ सुखसंपति जस नामे थाय ॥ ४ ॥ गाया वीरतणा गणधार ॥ गुणमणिरयणातणा भंडार ॥ उत्तम विजयगुरुनो सीस ॥ रत्नविजय वंदे निसदिश ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सीमंधरजिनचैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसीमंधर वीतराग, त्रीभुवन उपगारी ॥ श्री श्रेयांस पिताकुले, बहुशोभा तुमारी ॥ १ ॥ धन्यधन्य माता सत्यकी, जेणे जायो जयकारी ॥ वृषभलंछने बिराजमान, वंदे नर नारी ॥ २ ॥ धनुष पांचसे देहडी

ए, सोह्हीए सोवन वान ॥ कीर्त्तिविजय उवझायनो, विनय धरे तुमध्यान ॥ ३ ॥ इति० ॥ ५४ ॥

॥ अथ श्री सीमंधरजिन स्तवन ॥

॥पुरकलवइ विजयें जयोरे, नयरी पुंमरीगिणी सार॥ श्रीसीमंधर साहेबारे, रायश्रेयांस कुमार ॥ जिणंदरा य ॥ धरज्यो धर्म सनेह ॥१॥ एआंकणी ॥ मोटान्हाना अंतरोरे, गिरुआ नवि दाखंत ॥ शशि दरिसण सायर व धेरे, कैरव वन विकसंत ॥ जि० ॥ २ ॥ गाम कुगाम न लेखवेरे, जग वरसंत जलधार ॥ कर दोय कुसुमें वा सिएरे, बाया सविआधार ॥ जि० ॥ ३ ॥ राय रंक सरिखा गणेरे, उद्योते शशि सूर ॥ गंगाजल ते बिहुंत णारे, ताप करे सवीदूर ॥ जि० ॥ ४ ॥ सरिखा सहुने तारवारे ॥ तिम तुमेंगो महाराज ॥ मुजसुं अंतर किम करोरे, बांहे ग्रह्यानी लाज ॥ जि० ॥ ५ ॥ मुख दे खी टीलुं करेरे, ते नवि होय प्रमाण ॥ मुजरो माने सवितणोरे, साहिब तेह सुजाण ॥ जि० ॥ ६ ॥ वृषभ लंबन माता सत्यकीरे, नंदन रुकमणी कंत ॥ वाच कजस एम वीनवेरे, नय नंजन नगवंत ॥जि०॥७॥इति॥

॥ अथ श्री सीमंधरजिन थोय ॥

॥ श्रीसीमंधर जिनवर ॥ सुखकर साहेबदेव ॥ अरि

हंत सकलनी ॥ भावधरी करुं सेव ॥ सकल आगम पा
रक ॥ गणधर भाखीत वाणि ॥ जयवंती आणा ॥ ज्ञा
नविमल गुणखाणि ॥ १ ॥ इति ॥ ५६ ॥

॥ अथ सिद्धाचलजीनुं चैत्यतवंदन ॥

॥ श्रीशत्रुंजय सिद्धखेत्र ॥ दीठे डुरगतिवारे ॥ भाव
धरीने जेचढे ॥ तेने भव पार उतारे ॥ १ ॥ अनंत सि
द्धनुं एहगाम ॥ सकल तीरथनो राय ॥ पुरव नवाणुं
ऋषभदेव ॥ ज्यां ठविआ प्रभुपाय ॥ २ ॥ सुरजकुंम
सोहामणो ॥ कवड जक्ष अभिराम॥ नाभीराया कुल मं
मणो ॥ जिनवर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति ॥ ५७ ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

॥ विमलाचल नितु वंदिये ॥ कीजे एहनीसेवा ॥ मा
नुं हाथ ए धर्मनो ॥ शिव तरु फल लेवा ॥ वि०॥१॥
उज्जल जिनगृह मंमली ॥ तिहां दीपे उत्तंगा ॥ मानुं
हिमगिरी विभ्रमे ॥ आइ अंबर गंगा ॥ वि० ॥ २॥ को
ई अनेरो जगनहीं ॥ एह तीरथ तोले॥ एम श्रीमुख हरी
आगले ॥ श्रीसीमंधर बोले ॥ वि० ॥ ३ ॥ जे सघलां
तीरथ कस्यां॥जात्रा फल कहीए ॥ तेहथी ए गिरी भेटतां
॥ सत्तगणुं फल लहीएं ॥ वि० ॥ ४ ॥ जनम सफल
होय तेहनो॥ जेह एगिरि वंदे ॥ सुजसविजय संपद

जहे, ते नर चिर नंदे ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥ ५८ ॥

॥ अथः श्रीसिद्धाचलजीनी थोय ॥

॥ पुंडरगिरी महीमा ॥ आगममां परसिद्ध ॥ विम लाचल नेटी ॥ लहीए अविचल रूद्ध ॥ पंचमीगति पोहोता ॥ मुनिवर कोडाकोड ॥ इणें तीरथे आवी ॥ कर्म विपातक ठोड ॥ १ ॥ इति ॥ ५९ ॥

॥ अथ सामायकलेवानोविधी ॥

॥ प्रथम उंचें आसनें पुस्तकप्रमुख मुकीनें श्राव क श्राविका कटासणुं मुहपति चवलो लेइ, शुद्ध व स्त्र जग्या पुंजी, कटासण उपर बैसी, मुहपति मावा हाथमां मुखपासें राखी, जमणो हाथ थापनाजी स नमुख राखी एक नवकार गणि पंचिंदिअ कही, इच्छामि खमासमण देइ इरियावहिया, तस्सउत्तरी, अन्नच्छउस सएणं कही, एक लोगस्सनो अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, पारी, प्रगट लोगस्सकही, खमासमण देइ, इच्छाकारेण संदिसह जगवन्, सामायक मुहपति पडिलेउं इच्छं एमकहि मुहपति अंगनी पडिलेहण ना पचास बोलकही, मुहपति पडिलेहीएं. खमासमणदेइ० इच्छाकारेण संदिसह जगवन् सामायक संदिसाहुं इच्छं वली खमासमणदेइ, इच्छा० सामायक गउं, इच्छं एमकहि

बे हाथ जोडी एक नवकार गणी, इछकारी नगवन्, पसायकरी सामायक दंमक उच्चरावोजी. वडिल करेमिनंते कहे. पछी खमासमणदेइ इछा० बेसणे संदिसाहुं ॥ खमा० ॥ इछा० ॥ बेसणे गउं. खमा० ॥ इछा० ॥ सझाय संदिसाहुं ॥ खमा० ॥ इछा०॥ सझायकरुं इछं॥ एमकहि त्रण नवकार गणवा, पछी बेघडी सझाय धर्मध्यान करवुं ॥ इति सामायक लेवानो विधिसमाप्तम्. ॥

॥ अथ सामायक पारवानो विधि ॥

॥ खमासमणदेइ इरियावहि पडिक्कमाथी जावत् लोगस्ससुधी कही खमा० ॥ इछा० ॥ मुहपति पडिलेहुं कही, मुहपति पडिलेहि, खमासमणदेइ, इछा० ॥ सामायक पारुंः यथासक्ति वली खमासमणदेइ, इछा० ॥ सामायक पार्युं; तहत्ती कही, पछी जमणोहाथ चवला उपर अथवा कटासणांउपर थापी, एक नवकार गणी सामाइय वयजुत्तो कहियें. पछी जमणो हाथ थापना सन्मुख सवलो राखी ने एक नवकार गणीयें.॥इति

॥ अथ पडिलेहण करवानो विधि ॥

॥ नवकार पंचिंदिय कही इरिया वहियाए स्थापना होय तो नवकार पंचिंदिय न कहेवुं. पछी तस्सुत्तरी कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सगकरी

प्रगट लोगस्स कही उने पगें बेसी. मुहपत्ति, कटासणु, चवलो, उतरासण, धोतीउं, कंदोरो आदे पडिलेहवां, पछी काजो काहाडी जीव कलेवर सचित आदे जोवुं. पछी काजो काहाडनार थापनाजी सन्मुख उभो रही इरियावहि पडिक्कमे, पछी काजो परठववा जग्या सोधि त्रण वार अणुजाणह जस्सग्गो कही काजो परठवे, पछी त्रण वार वोसिरे कहे. इति पडिलेहण करवानो विधि ॥ ६१ ॥

॥ अथ देव वांदवानो विधि ॥

॥ प्रथम इरियावहि पडिक्कमवाथी मांमीने जावत् लोगस्स कही, पछी उत्तरासण नांखीने चैत्यवंदन नमुत्थुणं कही जयवीअराय आ नव मखंमासुधी अर्द्धो कहे, वली बीजुं चैत्यवंदन करी, नमुत्थुणं कही जावत् चार थोयो कहीये. वली नमुत्थुणं कही यावत् बीजी चार थोयो कहीए त्यांसुधी बधुं केहेवुं, पछी नमुत्थुणं तथा बे जावंतीकही. एटले जावंति चेइआइं तथा जावंत केविसाहु ए बे कही उवसग्गहरं अथवा स्तवन कही, अर्द्धो जय वीअराय आजव मखंमासुधि कही, पछी चैत्यवंदन कही नमुत्थुणं कही संपूर्ण जय वीअराय केहेवा. प्रभाते देववांदवा तेहमां मन्हजिणाणंनी सझाय केहेवी, मध्यान्हे तथा सांझे देव वांदे तेहमां सझाय नकहे॥इति॥

॥ अथ देवसि प्रतिक्रमण विधी प्रारंभः ॥

॥ प्रथम सामायक लिजे. पछी पाणी वावर्युं होयतो मुहपती पडिलेहेवी, अने आहार वावर्यो होयतो वांदणां बे देवां, त्यां बीजा वांदणामां आवसीआए ए पाठ नके हेवो. यथा शक्ति पच्चरकाण करवुं. खमासमण देइ इच्छाकारेण कही, वडेरा अथवा पोते चैत्य वंदन कहिने पछी जंकिंचिं नमुत्थुणं कही, उभा थईने अरिहंतचेईयाणं कहिने एक नवकारनो काउस्सग्ग करी नमोऽर्हत० कहिने प्रथम थोय केहेवी. पछी लोगस्स, सव्वलोए, अरिहंतचेईयाणं कहिने एक नवकारनो काउस्सग्ग पारीने बीजी थोय केहेवी. पछी पुस्करवरदी कही, सुअस्स भगवउ करेमि काउसग्गं वंदण० एक नवकारनो काउसग्ग पारी त्रीजी थोय कहेवी. पछी सिद्धाणं बुद्धाणं कही वेयावच्च गराणं० करेमि काउसग्गं अनत्थ० ॥ पछीएक नवकारनो काउसग्गपारी, नमोऽर्हत० कही, चोथी थोय केहेवी. पछी बेसीने नमुत्थुणं केहेवुं. पछी चार खमासमण देवा पुर्वक भगवान् आचार्य उपाध्याय सर्व साधुभ्यः प्रत्यें वंदन करीयें. पछी इच्छाकारेण० ॥ देवसि प्रतिकमणे ठाउं एमकहि जमणोहाथ चवला कटासणा उपर थापीनें इच्छं सव्वसवी देवसिअ० केहेवुं. पछी उ

नाथइ करेमिनंते इच्छामि गमि काउसग्गं जोमें देव सिउ तस्सउत्तरी० कही. पछी आठ गाथानो काउसग्ग करवो ॥ आठ गाथा न आवडे तो आठ नवकारनो काउसग्ग करवो ते पारीने, पछी लोग्गस कहेवो ॥ बेसीनें त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ती पडिलेहीने वांदणा बे देवां. पछी उना थइने इच्छाका० देवसिअं आलोउं इच्छं आलोएमि जोमेदेवसिउ कहीने. पछी सातलाख कहेवा. पछी अढार पापस्थानक आलोइने सव्वस्सवि देवसिअं कहीने बेसवुं. बेसीने एक नवकार गणी पछी करेमिनंते ईच्छामि पडिक्कमिउं कहीने, वंदितु कहेवुं, पछी वांदणां बे देवां. पछी अप्पुट्ठिउहं अप्भितर देवसिअं खामीने वांदणां बे देवां पछी उनाथइ आयरीय उवज्झाए कहीने करेमिनंते इच्छामिगमि काउसग्गं जोमें देवसिउ० तस्सउत्तरी० कही पछी बे लोगस्सनो अथवा आठ नवकारनो काउग्गपारीने पछी लोगस्स प्रगट कहेवो. पछी सव्वलोए, अरिहंतचेईयाणं, वंदणवत्तिआए कही, एकलोगस्स अथवा चार नवकारनो काउसग्ग पारीने, पुखरवरदी० सुअस्सनगवउ० करेमि० वंदण० एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउसग्ग पारीने, सिद्धाणं बुद्धाणं० कही सुअ देवयाए

करेमि काउसग्गं एक नवकारनो काउसग्ग पारी न
मोऽर्हत० कही, पुरुषे सुअदेवयानी पेहेली थोय कहेवी
अने स्त्रीये कमलदलनी पेहेली थोय कहेवी. पछी खे
त्रदेवयाए करेमि काउसग्गं० एक नवकारनोकाउसग्ग
पारी नमोर्हत० कही क्षेत्र देवयानी बीजी थोय स्त्रीये
तथा पुरुषे बंने ने कहेवी. पछी प्रगट एक नवकार गणी
बेसीने, छग आवश्यकनी मुहपती पडिलेही, बे
वांदणां आपीए. पछी सामायक चउविसत्थो, वंदण, प
डिक्कमणुं, काउसग्ग अने पच्चख्काण ए छ आवश्यक सं
भारवा. पछी इच्छामो अणुसर्हिं कही नमो खमासमणा
णं कही नमोऽर्हत० कहीने पुरुष नमोस्तु वर्द्धमानाय
कहे, अने स्त्री संसार दावानी त्रण गाथा कहे. पछी
नमुत्थुणं कही स्तवन कहेवुं. पछी वरकनक कही भग
वान् आदे वांदवा. पछी जमणो हाथ उपधी उपर था
पी अढाईजेसु कहेवुं. पछी देवसिअ पायच्छित्तनो काउ
स्सग्ग चार लोगस्सनो अथवा सोल नवकारनो करवो
पछी ते काउस्सग पारी, प्रगट लोगस्स कही, बेसीने
खमासमण बे देइ सज्झायनो आदेश मागी, एक नवका
र गणी सक्षाय कहीए, पछी एक नवकार गणीए, पछी
दुख्खख्खउ कम्मख्खउ नो काउसग्ग चार लोगस्सनो संपू

ण अथवा सोल नवकारनो करवो. एक वडेरे अथवा पोते पारीने नमोऽर्हत् कही लघुशांति कहेवी, पछी प्रगट लोगस्स कहेवो, पछी इरियावही कही तस्सउत्तरी एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग करी प्रगट लोगस्स केहेवो. पछी चउकसाय कही, नमुत्थुणं, जावंति बे कही, उवसग्गहरं, जयवीयराय कही, मुहपति पडिलेहेवी. इच्छामि० ॥ इच्छाका० ॥ सामयक पारवुं यथाशक्ति इच्छामि० ॥ इच्छाका० सामायक पार्युं तहत्ति कही पछी जमणोहाथ उपधी उपर थापी एक नवकारगणीने सामाइअ वय जुत्तो कहेवो. पछी थापना होयतो एक नवकार गणी उठे. ॥ इति ॥ देवसिप्रतिक्रमणविधी कही, बाकी अंतरविधी वडेराथी समजवी.

॥ अथ राइ प्रतिक्रमण विधी ॥

॥ प्रथम पूर्वनीरीते सामायकलीजे ॥ पछी कुसुमिण दुसुमिणनो काउस्सग्ग चार लोगसनो अथवा सोल नवकारनो करी पारी प्रगट लोगस्स कहेवो, पछी खमासमणदेइ जगचिंतामणीनुं चैत्यवंदन जयवीयराय सुधी करवुं पछी चार खमासमण पूर्वक भगवान्, आचार्य, उपाध्याय सर्व साधु प्रत्यें वांदवा, खमासमण बे देइ सज्झायनो आदेश मागी एक नवकार गणीने भरहेसरनी

सज्झाय कहीने फरी एक नवकार गणवो. पछी इच्छाका र सुहराइनो पाठ केहेवो, पछी इच्छाका० राइ प्रति क्रमणेठाउं कहीने जमणो हाथ उपधी उपर स्थापीने इच्छंसव्वसवी राइय दुचिंतीय० कही ॥ नमुत्थुणं करेमि भंते कही इच्छामि ठामि काउसग्गं० तस्सउत्तरी कही एक लोगस्स अथवा चार नवकार नो काउस्सग्ग पारिने. प्रगट लोगस्स कही सव्वलोए० अरिहंत० कही एक लोगस्स अथवा चार नवकार नो काउसग्ग पारी पुरकरवरदी० सुअस्स० वंदण० कही अतिचारनी आठ गाथानो अथवा आठ नवकारनो काउसग्ग पारी, सिद्धाणं बुद्धाणं कहीने, त्रीजा आवश्यकनी मुहपति पडिलेही वांदणां बे देवां, त्यांथी ते अब्भुठिउ खामि वांदणां बे दीजे, त्यां सुधि देवसिनीरीते जाणवुं. पण जे ठामें देवसिअं आवेछे ने ठामे राइयं केहेवुं. पछी आयरिअ उवज्झाए० करेमिभंते इच्छामि ठामि काउसग्गं तस्सउत्तरी कही तप. चिंतामणि करतां न आवडेतो चार लोगस्सनो अथवा सोल नवकारनो काउसग्ग करवो, तेपारी प्रगट लोगस्स कही, पछी छठा आवश्यकनी मुहपती पडिलेहीने वांदणां बे देवां, ते पछी तीर्थवंदन करवुं, पछी यथाशक्तियें पच्चरकाण करवुं,पछी इच्छाकारेण संदि

सह् नगवन् सामायक, चउव्विसत्थो, वंदण, पडिक्कमणु, काउसग्ग अने पच्चरकाण ए आवश्यक संनारवा पच्चखाण कर्युं होयतो कर्युं ठेजी कहेवुं, अने धार्युं होयतो धार्युं ठेजी एम कहेवुं. पठी इच्छामोअणुसठिं नमोखमास मणाणं नमोऽर्हत्० पठी विशाललोचन नमुत्थुणं, अरिहंतचेईयाणं एटला कहीने एक नवकारनो काउसग्ग पारीने नमोऽर्हत्० कही कल्याणकंदनी थोय प्रथम कहेवी. लोगस्स,पुरकरवरदि, सिद्धाणंबुद्धाणं, कही अनुक्रमे चार थोयो कहीयें ठेए त्यांसुधी सर्व कहेवुं. पठी नमुत्थुणं कही नगवान्आदि चार ने चार खमासमणे वांदवां. पठी जमणोहाथ उपधी उपर थापी अड्ढाइज्जेसु कहेवुं. पठी श्री सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जय वीय राय, काउसग्ग थोय पर्यंत करवुं. पठी खमासमण पुर्वक श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय, काउसग्ग थोयसुधी करवुं ॥ पठी सामायक पारवाना विधीनी रीते सामायक पारवा सुद्धी कहेवुं ॥ इति राइप्रतिक्रमण नो विधी समाप्त ॥ ६५ ॥

॥ अथ पच्चखाणपारवानो विधी ॥ ६६ ॥

॥ प्रथम इरियावहियाए पडिकमीयें जावत् जगचिंतामणीनु चैत्यवंदन जयवीयराय सुधि करवुं. ॥

पछी मन्हजिणाणंनी सझायकही मुहपत्ति पडि ले हेवी. इछामी० इछाका० पच्चखाणपारुं, यथाशक्ति इछा मी० इछाका० पच्चरकाण पारयुं, तहत्ति एमकही जमणो हाथ कटासणा चवला उपर थापी एक नवकार गणी पच्चखाण कर्युं होय ते कही पारवुं ॥ ते लखिए छैए.

उग्गएसूरे नमुक्कारसहिअं पोरसिं साढपोरसिं गंठ सहिअं मुठसहिअं पच्चरकाण कर्युं चौविहार आंबिल नीवि एकासणु बेआसणु कर्युं, तिविहार पच्चखाण फासिअं पालिअं सोहिअं तीरिअं किट्टिअं आराहिअं जंच न आराहिअं तस्समिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥६६॥

॥ अथ प्रनातनां पच्चखाण ॥

॥ अथ नमुक्कारसहिअं मुठसहिअंनुं ॥

॥ उग्गए सूरे नमुकारसहिअं मुठसहिअं पच्चरकाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछ णा नोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहि वत्तिया गारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ ६७ ॥

॥ अथ पोरिसि साढपोरिसिनुं ॥ ६८ ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साढपोरिसिं मुठसहियं पच्चरकाइ उग्गएसूरे चउविहंपि आहारं अ सणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणा नोगेणं सहस्सा

गारेण पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महतरा गारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ ६८ ॥

॥ अथ सांजनां पच्चरकाण ॥ अथ चउविहारनुं ॥

दवस चरिमं पच्चरकाई चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणा नोगेणं सहस्सागारेणं महत्त रागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति॥६९॥

॥ अथ तिविहारनुं ॥ ७० ॥

॥ दिवस चरिमं पच्चरकाई तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नछणानोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे॥इति ॥७०॥

॥ अथ डुविहारनुं ॥ ७१ ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चरकाइ डुविहंपि आहारं असणं खाइमं अन्नछणा नोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरा गारेणं सव्वसमाहि वत्तियागारेणं ॥ वोसिरे ॥ इति ॥७१॥

॥ अथ क्रोधनी सज्झाय ॥ ७२ ॥

॥ कडुवांफळछे क्रोधनां, ज्ञानी एम बोले ॥ रीसतणो रस जाणीयें, हळाहळतोळे ॥ क०॥ १ ॥ क्रोधे क्रोडपूरवतणुं, संजम फळ जाय ॥ क्रोधसहित तप जे करे, ते तो लेखे नथाय ॥ क०॥ २ ॥ साधु घणो तपीयो हुतो, धरतो मन वैराग ॥ शीष्यना क्रोध थकी थयो, चंडको

सीयोनाग ॥ क० ॥ ३ ॥ आग उठेजे घर थकी, पहे
लुं ते घर बाले ॥ जलनो जोगजो नवि मले, तो पा
सेंनु परजाले ॥ क० ॥ ४ ॥ क्रोधतणी गति एहवी, क
हे केवलनाणी ॥ हाण्य करेजे हेतनी, जालवजो रे प्रा
णी ॥क० ॥ ५ ॥ उदयरतन कहे क्रोधने, काढजो गले
सांही ॥ काया करजो निरमली, उपसम रस नाही॥क०

॥ अथः— माननी सज्झाय ॥

॥ रे जीव मान न कीजीए, माने विनय न आवेरे ॥
विनय विना विद्या नहीं, तो किम समकित पावेरे ॥
॥ रे० ॥ १ ॥ समकित विण चारित्र नहीं, चारित्र वि
ण नहीं मुक्तिरे ॥ मुक्तिनां सुख छे सास्वतां, ते केम
लहिए जुक्तिरे ॥ रे० ॥ २ ॥ विनय वडो संसारमां,
गुणमां अधिकारीरे ॥ माने गुण जाए गली, चित्त
जो जो विचारीरे ॥ रे० ॥ ३ ॥ मान कर्युं जो राव
णे, ते तो रामें मार्योरे ॥ दुर्योधन गरवें करी, अंते स
वि हार्योरे ॥ रे० ॥ ४ ॥ सुकां लाकडां सारिखो, दुख
दाइ ए खोटोरे ॥ उदय रत्न कहे माननें, देजो दे
श वटोरे ॥ रे० ॥ ५ ॥ इति ॥ ७३ ॥

॥ अथः— मायानी सज्झाय ॥

॥समकितनुं मूल जाणीएजी,सत्य वचन साक्षात्॥ सा

त्वामां समकित वसेजी, मायामां मिथ्यात्वरे ॥ प्राणी मक रीश माया लगार ॥ १ ॥ (टेक) मुख मीठो जूठो म नेजी, कुड कपटनोरे कोट ॥ जीभें तो जी जी करेजी, चितमांहे ताके चोटरे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ आप गरजें आघो पडेजी, पण न धरे विश्वास ॥ मेल न छंडे मन तणोजी, ए मायानो पासरे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ जेहशुं बांधे प्रीतडी जी, तेहशुं रहे प्रतीकूल ॥ मयल न छंडे मन तणोजी, ए मायानुं मूलरे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ तप कीधुं माया क रीजी, मित्रसुं राख्योरे भेद ॥ मल्ली जिनेश्वर जाणजो जी, पाम्या स्त्री वेदरे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ उदय रत्न क हे सांभलोजी, मेलो मायानी बुद्ध ॥ मुक्ति पुरी जावा त णोजी, ए मारगछे शुद्धरे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥

॥ अथः श्री लोभनी सझाय ॥

॥ तुमें लक्षण जो जो लोभनांरे, लोभें जन पामे क्षोभ नारे ॥ लोभें माह्या मन मोह्या करेरे, लोभें दुरघट पं थे संचरेरे ॥ तु० ॥ १ ॥ तजे लोभ तेहनां लेउं भांमणां रे, वली पाये नमी ने करुं खामणांरे ॥ लोभें मरजादा न रहे केहनीरे, तुमें संगत मेलो तेहनीरे ॥ तु० ॥ २ ॥ लोभें घर मेहेली रणमां मरेरे, लोभें उंच ते नीचुं आ चरेरे ॥ लोभें पाप भणी पगलुं भरेरे, लोभें अकारज

करतां न उतरेरे ॥ तु० ॥ ३ ॥ लोनें मनडुं न रहे नि रमलुंरे, लोनें सगपण नासे वेगलुंरे ॥ लोनें न रहे प्री तने पावतुंरे, लोनें धनमेले बहु एकतुंरे ॥ तु० ॥ ४ ॥ लोने पुत्र प्रतें पिता हणेरें, लोने हत्या पातीक नवि गणेरे ॥ ते तो दाम तणे लोने करीरे, उपर मणीध र थाये ते मरीरे ॥ तु० ॥ ५ ॥ जोतां लोननो थोन दि से नहीरे, एवुं सूत्र सिद्धांते कह्युं सहीरे ॥ लोने चक्री संनुम नामे हुउरे, ते तो समुद्र मांहे रुबी मुवोरे ॥ ॥ तुं० ॥ ६ ॥ एम जाणीने लोन ते छंमजोरे, एक ध र्मसुं ममता मंमजोरे ॥ कवी उदय रत्न नाषे मुदारे, वं दु लोन तजे तेहने सदारे ॥ तु० ॥ ७ ॥ इति श्री संपूर्ण॥

॥ अथः श्री पार्श्वनाथनी आरती ॥

॥ आरति कीजें पास कुंवरकी, जन्म मरण नय ह र जिनवरकी ॥ नयरी वणारसी जन्म कहावे, वामा मा त प्रनू हुलरावे ॥ आ० ॥ १ ॥ योवन वन फल नो गि जणावे, नारि प्रनावती सती परणावे ॥ काय निरो ग नोग विलसावे, पुरिसा दाणी बिरुद धरावे ॥ आ०॥ ॥ २ ॥ ज्ञान विलोकी कमठ हरावे, गहन दहनथी फ णी निकसावे ॥ सेवक मुख नवकार सुणावे, धरणरा य पदवी निपजावे ॥ आ० ॥ ३ ॥ क्रोधि कमठ हठ

तप जय जावे, जिन दरशनशें सुरगति पावे ॥ जोग संयोग वियोग बनावे, संयम श्री आतम परणावे॥आ० ॥ ४ ॥ ध्यान लेहरियां काउसग्गचावे, स्वामिकुं वडलय तव गावे ॥ मेघ मालि जलधर वरसावे, जब नासा नर चर जल जावे ॥ आ० ॥५॥ तव धरणेंद्रासन कंपावे, पदमावति साथे त्यां आवे ॥ नाथ उरध सिर फणीकुं धरावे, जई अपराधी देव मरावे ॥ आ० ॥ ६ ॥ सांइ सरण लहि समकित पावे, फणिपति नाटक विधि विरचावे ॥ प्रभु चरणे नमी गेह सधावे, जगदिश्वर घनघाति हरावे ॥ आ० ॥ ७ ॥ साकारें केवल डुग पावे, धर्म कही जिन नाम खपावे ॥ भूतल विचरी मोक्ष सिधावे, अगुरु लघु गुण प्रभु निपजावे ॥ आ०॥ ८ ॥ आरत गतकी आरती गावे, श्रोता वक्तारति उतरावे॥मन मोहन प्रभु पास कहावे,श्रीमुनवीर ते शिश नमावे॥आ०

॥ अथः श्री श्रावक करणीनी स्वाध्याय ॥

॥ चोपाइ ॥ श्रावक तुं उठे परभात, चारघडीले पाछलिरात ॥ मनमां समरे श्री नवकार, ज्यम पामे भव सायर पार ॥ १ ॥ कवण देव कवण गुरु धर्म, कवण अमारे छे कुल कर्म ॥ कवण अमारे छे ववसाय, एवुं चिंतवजे मन मांय ॥ २ ॥ सामायिक लेजे मन सुद्ध,

धर्मनी हैडे धरजे बुद्ध ॥ पडिकमणो करे रयणी तणो, पातिक आलोई आपणो ॥ ३ ॥ काया शक्ते करे पच खाण, सूधि पाले जिननी आण ॥ नणजे गणजे स्त वन सझाय, जिणहुंती निस्तारो थाय ॥ ४ ॥ चितारे नीत चउदे नीम, पाले दया जीवतां सीम ॥ देहरे जा इ जुहारे देव, द्रव्य नावथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोसा ले गुरु वंदजे जाय, सुणो वखाण सदाचित्त लाय ॥ निर दूषण सुजंतो आहार, साधुने देजे सुविचार ॥६ ॥ सामि वत्सल करजे घणो, सगपण मोटो सामितणो ॥ डुखीया हीणा दिनने देख, करजे तास दया सु विशेष॥ ॥ ७ ॥ घर अनुसारे देजे दान, मोटाशुं तजजे अनि मान ॥ गुरुने मुख लेजे आखडी, धर्मन मुकीश एके घडी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, उंगा अधिकानो प रिहार ॥ म नरजे केनी कुडी साख, कूडा जनशुं कथ न म नाख ॥ ए ॥ अनंत काय कही बत्रीश, अनक्ष बाविशे विस्वा वीश ॥ ते नक्षण नवि कीजे किमे, काचां कूणां फल मत जिमे ॥ १० ॥ रात्री नोजनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ साजी साबु लोहने गली, मधु धावडि मत वेचो वली ॥ ११ ॥ वलि मक रावे रंगण पास, दूषण घणां कह्यांछे तास ॥ पाणी ग

लजे बे बे वार, अणगल पीतां दोष अपार ॥ १२ ॥
जीवाणीनां करजे यत्न, पातीक ढंमी करजे पुन्य ॥ छां
णा इंधण चूलो जोय, वावरजे ज्यम पापन होय॥ १३॥
घृत परें वावरजे नीर, अणगल नीर मथोऽस चीर ॥
ब्रह्म व्रत सूधुं पालजे, अतीचार सघला टालजे ॥ १४॥
कह्यां पन्नरे कर्मा दान, पापतणी परहरजे खाण ॥ शि
शम लेजे अनरथ दंम, मिथ्या मेल म नरजे पिंम ॥
॥ १५ ॥ समकित शुद्ध हैडे राखजे, बोल विचारीने ना
खजे ॥ पांच तिथी म करजे आरंन, पालो शील तजी
मन दंन ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत छधने दहिं, उघा
डां मत मेलो सही ॥ उत्तम ठामे खरचो वित्त, पर उप
गार करो शुनचित्त ॥ १७ ॥ दिवश चरिम करजे चोवि
हार, चारे आहार तणो परिहार ॥ दिवस तणां आलो
ए पाप, ज्यम नांजे सघला संताप ॥ १८॥ संध्याए आव
श्यक साचवे, जिनवर चरण सरण नवनवे ॥ चारे सर
ण करी दृढ होय, सागारी अणसण ले सोय ॥ १ए ॥
करे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुंजे जायवा ॥ समे
त शिखर आबु गिरनार, नेटीश हुं धन धन अवतार ॥
॥ २० ॥ श्रावकनी करणी ढे एह, एहथी थाए नवनो
ढेह ॥ आठे कर्म पडे पातला, पाप तणां छुटे आमला ॥

॥ २१ ॥ वारु लहिये अमर विमान, अनुक्रमे पामे शिव पुरधाम ॥ कहे जिन हर्ष घणे ससनेह, करणी दुख हर णी छे एह ॥ २२ ॥ इतिश्री श्रावकनी करणी संपूर्ण ॥

॥ अथः श्री आदिजिन स्तुती लिख्यते ॥

॥ आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया, मरुदेवी माया, धोरी लंछन पाया ॥ जगत थिती निपाया, शुद्ध चारीत्र पाया, केवल श्रीराया, मोक्षनगरे सधाया ॥ १ ॥ सवि जिन सुखकारी, मोह मिथ्या निवारी, दुरगती दुःख भारी, शोक संताप वारी, श्रेणी क्षपक सुधारी, केवलानंत धारी, नमियें नरनारी. जेह विश्वोप कारी ॥ २ ॥ समवसरण बेठा, लागे जे जिन मीठा, करे गणप पईठा, इंद्र चंद्रादि दीठा ॥ द्वादशांगी वरी ठा, गुंथता टाले रीठा, भविजन होय हीठा, देखि पुन्ये गरीठा ॥ ३ ॥ सुर समकित वंता, जेह ऋद्धे महंता, जेह सजनसंता, टालियें मुझ चिंता ॥ जिनवर सेवंता, विघ्नवारे दुरंता. जिन उत्तम थुणंता, पद्मने सुखदिंता॥

॥ अथः श्री तिर्थमाला स्तवन लिख्यते ॥

॥ शत्रुंजे ऋषभ समोसर्या, भला गुण भर्यारे ॥ सिद्धा साधु अनंत, तीरथ ते नमुंरे ॥ तिन कल्याणक तिहां थया, मुगते गयारे ॥ नेमिसर गिरनार ॥ती०॥१

अष्टापद एक देहरो, गिरी सेहरोरे॥ भरतें भराव्यां बिंब ॥ ती० ॥ आबुचौमुख अतिभलो, त्रिभुवन तिलोरे॥ विमल वसे वस्तु पाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेत शिखर सोहमणो, रलीयांमणोरे॥ सिद्धा तिर्थंकर वीश ॥ ती०॥ नयरी चंपा निरखीए, हैयें हरखीएरे ॥ सिद्धा श्री वासु पूज्य॥ ती०॥३॥ पूर्वदिशे पावापुरी, रूद्धेभरीरें ॥ मुगति गया महावीर ॥ ती०॥ जेशलमेर जुहारीए, डुख वारीयेंरे ॥ अरिहंत बिंब अनेक॥ ती० ॥४॥ वीकानेरज वंदीए, चिरनंदीएरे ॥ अरिहंत देहरां आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेश्वरो, पंचासरोरे ॥फलोधी थंभणपास॥ ती० ॥५॥ अंतरीक अजावरो, अमीझरोरे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ती० ॥ त्रिलोक्य दीपक देहरो, जात्रा करोरे ॥ राणपुरे रिसहेस ॥ ती० ॥ ६॥ श्रीनाडुलाइ जादवो, गोडि स्तवोरे ॥ श्रीवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरां, बावन भलांरे ॥ रूचक कुंमले चार चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ सास्वती अशाश्वती, प्रतीमा छतीरे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल॥ ती० ॥ तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो मुज इहांरे ॥ समय सुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ ८ ॥ इतिश्री संपूर्ण ॥

॥ अथः श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥आखडीएरे मे आज शत्रुंजय दिठोरे ॥ सवा लाख

टकानो दाहाडोरे ॥ लागे मने मीठोरे ॥ सफल थयोरे माहारा मननो उमाहो ॥ वाहला मारा जबनो संसय भाग्योरे ॥ नरक तिर्यंच गति दूर निवारी ॥ चरणे प्र भुजीने लाग्योरे ॥ शत्रुंजय दिठोरे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मानव भवनो लाहो लीजे ॥ वा० ॥ देहडी पावन कीजे रे ॥ सोना रुपाने फूलडे वधावी ॥ प्रेमे प्रदक्षिणा दिजेरे ॥ शत्रूं० ॥ २ ॥ डुधडे परवालीने केशर घोली ॥ वा० ॥ श्री आदेश्वर पुज्यारे ॥ श्री सिद्धाचल नयणें जोतां ॥ पा प में वासी धुज्यारे ॥ शत्रूं० ॥ ३ ॥ श्री मुख सुधर्मा सुर पति आगे ॥ वा० ॥ वीर जिणंद एम बोलेरे ॥ त्रण्यभु वनमां तीरथ म्होटुं ॥ नहिं कोइ शत्रूंजय तोलेरे ॥ श त्रूं० ॥ ४ ॥ इंद्र सरीखा ए तीरथनी ॥ वा० ॥ चाकरी चित्तमां चाहेरे ॥ कायानी तो काह्यर काढी ॥ सुरज कुं डमां नाहेरे ॥ शत्रूं० ॥ ५ ॥ कांकरे कांकरे श्री सिद्ध क्षेत्रे ॥ वा० ॥ साधु अनंता सिद्धारे ॥ ते माटे ए तीर थ म्होटुं ॥ उद्धार अनंता कीधारे ॥ शत्रुं० ॥ ६ ॥ नाभि राया सुत नयणे जोतां ॥ वा०॥ मेह अमीरश वू ठारे ॥ उदय रत्न कहे आज म्हारे पोते ॥ श्री आदेश्व रतूठारे ॥ शत्रूं० ॥ सवा० ॥ ७ ॥ इति श्री संपूर्ण ॥

॥ अथः श्री सिद्धाचल स्तुति लिख्यते ॥

॥ विमलाचल मंडण, जिनवर आदि जिणंद ॥ निरमम निर मोही, केवल ज्ञान दिणंद ॥जे पूर्व नवाणु, आव्या धरी आणंद ॥ शत्रुंजय शिखरे, समवशर्या सुखकंद ॥१॥ ईणे चोवीशी,ऋषभादिक जिनराय ॥वलि काल अनंते,अनंत चोवीशी थाय॥ते सविइण गिरिवर,आवी फरसी जाय ॥ एम भावि कालें, आवशे सविमुनिराय॥ २ ॥ श्री ऋषभनागणधर,पुंडरीक गुणवंत॥ द्वादशअंग रचना, कीधी जेणे महंत ॥ सवि आगममांहे, एनो महिमा महंत॥भाष्यो जिनगणधर,सेवो थिर करी चित्त ॥ ३॥चक्केशरी गोमुह, कवडपमुह सुरसार ॥ जसु सेवा कारण, थापे इंद्र उदार ॥ देव चंद्र गणी भाषे, भविजनने आधार ॥ सवि तीरथ मांहे, सिद्धाचल शिरदार ॥ ४ ॥

॥ अथः सीमंधर जिननी थोय. ॥

॥ श्रीसीमंधर देव सुहंकर, मुनि मन पंकज हंसाजी॥ कुंथुअर जिन अंतर जनम्या, तिहुंअण जश परसंशाजी ॥ सुव्रत नमि अंतर वरी दिक्षा, शिक्षा जग निरासेंजी ॥ उदय पेढाल जिनांतरमां प्रभु, जाशे शिव वहु पासेंजी ॥ १ ॥ बत्रीश चउसठि चउसठि मलिया, इग सय सठि उक्किठाजी ॥ चउ अड अडमली मध्यम

काळे, वीश जिनेश्वर दिठाजी ॥ दो चउ चार जघन्य दश जंबु, धायई पुस्कर मोझारेजी ॥ पुजो प्रणमो आचा रांगें, प्रवचन सार उद्धारेजी ॥ २ ॥ सीमंधर वर केवळ पामी, जिन पद खवण निमित्तेजी ॥ अर्थनी देशन वस्तु निवेशन, देतां सुणत विनितेजी ॥ द्वादश अंग पूरव युत रचियां, गणधर लब्धि विकसियाजी ॥ अपळ्ळ वसिय जिनागमवंदो, अक्षर पदना रसियाजी ॥ ३ ॥ आणा रंगी समकित संगी, विविध भंग व्रतधारीजी ॥ चउ विह संघ तीरथ रखवाळी, सहु उपद्रव हरनारीजी ॥ पंचांगुली सुरि शासन देवी, देती तस जश रिद्धीजी ॥ श्री शुभ वीर कहे शिव साधन, कार्य सकळमां सिद्धीजी ॥ ४ ॥

॥ अथः रुषभ जिन चैत्य वंदन ॥

॥ जय जय नाभि नरिंद नंद, सिद्धाचल मंमण ॥ जय जय प्रथम जिणंद कंद, भवदुःख विहंमण ॥ १ ॥ जय जय साधु सुरिंद वृंद, वंदिय परमेश्वर ॥ जय जय जगदानंद कंद, श्री रुषभ जिनेश्वर ॥ २ ॥ अमृत सम जिन धर्मनोए, दायक जगमां जाण ॥ तुज पद पंकज नित नमुं, निशदिन नमत कल्याण ॥ ३ ॥

॥ अथः श्री मंगलाचार प्रभात समये ॥

॥ श्लोक ॥ मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमः प्र

त्तुः ॥ मंगलं स्थूल नद्राद्या, जैनो धर्मोस्तु मंगलं ॥१॥ सर्वारिष्ट प्रणा शाय, सर्वाभीष्टार्थ दायिने ॥ सर्वल ब्धि निधानाय, गौतम स्वामिने नमः ॥ २ ॥ दोहरा ॥ अंगुठे अमृत वसे, लब्धि तणो नंमार ॥ जे गोयम गुरु समरिये, वांछित फल दातार ॥ ३ ॥ पुंमरीक गोयम पमुह, गणहर गण संपन्न ॥ प्रह उठीने प्रणमिये, चउदहसे बावन्न ॥४ ॥ बोरस किमरस किन्नरश, चोथा जसो नद्रशूर ॥ त्रिणे काले समरतां, डुरिय पणासे दूर ॥ ५ ॥ जे चारित्र निरमला, ते पंचायण सिंह ॥ विषय कषायने गंजिया, ते समरो निश दिंह ॥ ६ ॥ गाम तणे पैसारणे, गोयम गुरु समरंत ॥ इछा नोजन घर कुशल, लछि लील करंत ॥ ७ ॥ चोपाइ ॥ वीर जिणेश्वर केरोशिष्य, गौतम माम जपो निशदीश ॥ जो कीजें गौतमनुं ध्यान, तो घर विलसे नवे निधान ॥१॥ गोतम नामें गयवर चढे, मन वंछित हेला संपजे ॥ गौतम नामें नावे रोग, गौतम नामे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंकडा, जस नामे नावे ढूकडा ॥ नूत प्रेत नवि मंमै प्राण, ते गौतमनां करुं वखाण ॥ ३ ॥गौतम नामें निर्मल काय, गौतम नामें वाधे आय ॥ गौतम जिण साशन सिणगार, गौतम नामें

जय जय कार ॥४॥ साल दाल सुरहां घृत गोल, मन वंछित कापड तंबोल ॥ घरे सुघरणी निरमल चित्त, गोतम नामें पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल जाण, गौतम नाम जपो जग जाण ॥ मोटां मंदिर मेरु समान,गौतम नामें सफल विहाण ॥६॥ घर मयगल घोडांनी जोड, पहोचे वारु वंछित कोड ॥ महियल माने मोटा राय, जो तुसे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले, उत्तम नरनी संगति मले ॥ गौतम नामें निरमल ज्ञान, गौतम नामें वाधेवान ॥ ८ ॥ पुन्य वंत अवधारो सहू, गुरु गौतमना गुणछे बहू ॥ कहे लावण्य समे करजोड, गौतम तूठे संपत कोड ॥ ए॥

॥ शार्दूल विक्रीडीत वृत॥ ब्राह्मीचंदन बालिका नगवती राजीमती द्रौपदी ॥ कौशल्याच मृगावतीच सुलसा सीता सुनद्राशिवा ॥ कुंती शीलवती नलस्य दयिता चूला प्रनावत्यपि ॥ पद्मावत्यपि सुंदरी दिनमुखे कुर्वंतुवो मंगलं ॥१॥अहिम गोहिम गोधरणी सुतो, बुध वृहस्पति दानव पूजिताः॥ रविज राहुस केतु नवग्रहा,विदधतां सततंमम संपदं ॥१॥ श्लोक ॥ सर्वे मंगल मांगल्यं, सर्वे कल्याण कारणं॥ प्रधानं सर्व धर्माणं, जैनं जयति शासनं ॥२॥

॥ अथः सोल सतियोनी सझाय ॥

॥ आदिनाथ आदे जिनवर वंदी, सफल मनोरथ कीजीएंए ॥ प्रभाते उठी मंगलीक काजे, सोल सतिनां नाम लीजीएंए ॥ १ ॥ बाल कुमारी जग हितकारी, ब्राह्मि भरतनी बेहेनडीए ॥ घट घट व्यापित अक्षररूपे, सोल सतिमांहे जे वडीए ॥ २ ॥ बाहु बल भगनी सती शिरोमणी, सुंदरी नामे रूषभसुताए ॥ अंग स्वरूपे त्रिभुवन मांहे, जेह अनुपम गुण युताए ॥ ३ ॥ चंदन बाला बालपणेथी, शियलवती शुद्ध श्राविकाए ॥ अडदने बाकुले वीरप्रती लाभ्या, केवल लही व्रत भाविकाए ॥ ४ ॥ उग्रशेन धूया धारणी नंदनी, राजीमती नेम वल्लभाए ॥ योवन वेषे कामने जीती, संयम लिये देव दुल्लभाए ॥ ५ ॥ पंच भरतारी पांडवनारी, द्रुपद तनया वखाणीएंए ॥ एक सो आठे चीर पुराणां, शियल महिमा तसु जाणीएंए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम, कौशल्या कुल चंद्रिकाए ॥ शियल सलुणी राम जनेता, पुन्यतणी पर नालिकाए ॥ ७ ॥ कोसंबिक ठामे सतानीक नामे, राज्य करे रंग राजीउए ॥ तसु घर घरणी मृगावति सती, सुरभुवने जश गाजीउए ॥ ८ ॥ सुलसा साची शियले न काची, राचीनहीं विषया रशेंए ॥

मुखडुं जोतां पाप पुलाए, नाम लेतां मन उल्लसेए
॥ ए ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामनी, जनक सुता
सिता सतीए ॥ जग सहु जाणे धीरज करंतां, अनल
शीतल थयो शियलथीए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चार
णी बांधी, कुआ थकी जल काढीउंए ॥ कलंक उतारवा
सती सुनड़ा, चंपा बार उघाडिउंए ॥ ११ ॥ सुरनर
वंदीत शील अखंडीत, शिवा शीवपद गामनीए ॥
जेहने नामे निरमल थइए, बलिहारी तसु नामनी
ए ॥ १२ ॥ हस्तिनापुरे पंडुरायनी, कुंता नामे का
मनीए ॥ पांडव मातादशो दशारनी, बहेन पतिव्रता पद्मनी
ए ॥ १३ ॥ शिल वती नामे शील व्रत धारणी, त्रिविधे
तेहने वंदीएंए ॥ नाम जपंतां पातीक जाए, दरीशन दूरीत
निकंदीएंए ॥ १४ ॥ नैषधा नयरी नल नरींदनी, दम
यंती तसु गेहनी ए ॥ संकट पडतां शीयलज राख्युं, त्रिभुव
न कीरती एहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग जीता ते जगजन
पूजिता, पुष्फ चूला ने प्रभावती ए ॥ विश्व विख्याता का
मित दाता, शोलमी सति पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरे भा
खी शास्त्र छे साखी, उदय रत्न जंपे मुदाए ॥ व्हाणुं
वाहातां जे नर भणसे, ते लेशे सुख संपदाए ॥ १७ ॥